

Written by बीन मशिर

Friday, 29 September 2017 21:19

: 0000000000 0000000 0000000 00000000000 0000 0000 00 00000 0000, 000000 0000 0000  
00000000 00000 : 00000000 00 000000 0000000 00 00 000000 00000000 00 000000000 00000000 :  
0000000000 00 0000000000 0000 0000 00000000 00 0000 000000 0000 00000000 :



0000 000000

000000 : आप जिस शख्स को देख रहे हैं वो रामपाल है। रामपाल जो जन्म से ही दृष्टहीन हैं पर आज सबके लिये मशाल बने हुये हैं। दृष्टहीन रामपाल दुर्गा मूर्तियों में जान भर देते हैं। जाहरि सी बात है, दृष्टहीन पैदा होने पर परिवार वालों का उत्साह अचानक नरिशा में बदल जाता है। लेकिन कई ऐसे भी हैं जिनके साहस और हौसले के सामने शरीरिक विकलांगता कभी बांधा नहीं बन पाती। वह अपने पूरे परिवार का सरिफ सहारा ही नहीं बनते बल्कि दूसरों को भी प्रेरति करते हैं। इन्हीं में से एक है केलकता के रामपाल।

रामपाल पैदाइशी दृष्टहीन होने के बावजूद अपने हुनर से दुर्गा मूर्तियों में जान भर देते हैं। इन दिनों रामपाल अपनी टीम के साथ हररैया इलाके के बबुराहवा चौराहे पर दुर्गा मूर्तियों का निर्माण कर रहे हैं। रामपाल की बनाई हुई मूर्तियों की इतनी मांग है कि नवरात्री शुरू होने से पहले ही सभी मूर्तियां बुक हो गई हैं।

मूर्ति कलाकार रामपाल केलकता में शांतपुर इलाके के नकिंजनगर के रहने वाले हैं। रामपाल ने बताया कि उनके पिता वजिय कृष्णपाल के तीन बेटे हुए। तीनों जन्म से ही दृष्टहीन थे। तीनों बेटों के विकलांग पैदा होने पर पहले तो पिता को बहुत नरिशा हुई, लेकिन कुछ दिन बाद नई उम्मीद और विश्वास के साथ उन्होंने अपने बच्चों को स्वावलंबी बनाने की ठानी।

रामपाल के मुताबिक जब वह और उनके भाई 10-12 साल की उम्र के हुए। तभी पिताजी ने उन्हें मूर्ति बनाने की कला सीखाना शुरू किया। इस कला के सीखने में तीनों भाइयों को करीब 10 साल लग गए। ट्रेनिंग के दौरान पिता जी ने बांस की फट्टी कटना, जो ना और घास से बांधना सीखाया। इसके बाद मट्टी का लेप करने की बारी की सीखाकर एक कबलि कलाकार बनाया।

बतौर रामपाल, मूर्ति बनाते वक्त कभी कोई गलती होती थी तो पिता जी पटाई भी कर देते थे। लेकिन बाद में लाकरना भी नहीं भूलते थे। रामपाल ने

Written by बी न मशिर

Friday, 29 September 2017 21:19

---

बताया मूर्तिबनाने में पारंगत होने के बाद उन्होंने अपनी पत्नी और दो बच्चों के साथ लेकर छह लोगों की टीम तैयार की। इसके बाद नवरात्री से पहले मूर्तिबनाने के लिए अलग-अलग शहरों की तरफ नक्कल पड़े। पछिले पांच साल से वह लगातार बस्ती जल में आकर मूर्तिबनाकर बेचने का कारोबार कर रहे हैं।

रामपाल ने बताया कि, वह मूर्तिबनाने के दौरान प्लास्टर ऑफ पैरिस और घातकरंगों का इस्तेमाल नहीं करते। वह सिर्फ खेत की मट्टी से ही मूर्तियों का निर्माण करते हैं और रंगाई के लिए हर्बल क्लर का उपयोग करते हैं। उन्होंने बताया कि, नदियों और तालाबों में विसर्जन के बाद उनकी बनाई मूर्तियां पूरी तरह पानी में गल जाती हैं और प्रदूषण नहीं फैलने देती।